PHILOSOPHY

PG III Sem. (Indian Logic)

व्याप्ति के प्रकार

Dr. S. K. Singh
Mob.-9431449951

→ भारतीय प्रमाणमीमांसकों ने व्याप्ति के कई प्रकार के भेद गिनाये हैं, यथा - अन्वय-व्यतिरेक, सम-विषम, सामान्य-विशेष, अन्तर्व्याप्ति-बहिर्व्याप्ति-साकल्य आदि। किन्तु इनमें से प्रथमोक्त व्याप्ति के प्रकार ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं - अन्वय-व्यतिरेक और सम-विषम व्याप्ति।

→ अन्वय-व्यतिरेक व्याप्ति - व्याप्ति का यह वर्गीकरण नैयायिकों ने प्रस्तुत किया है। महर्षि गौतम के साधर्म्य तथा वैधर्म्य उदाहरण विवेचन में अन्वय तथा व्यतिरेक व्याप्तियों का भेद निहित है।

हेतु का साध्य के साथ स्वाभाविक संबंध अन्वय व्याप्ति है, जैसे धूम की अग्नि के साथ व्याप्ति। दूसरी ओर 'साध्य के अभाव' की 'हेतु के अभाव' के साथ व्याप्ति 'व्यतिरेक व्याप्ति' कहलाती है, जैसे - 'जहाँ जहाँ धुँआ है वहाँ वहाँ आग है' - अन्वय व्याप्ति है, वैसे ही 'जहाँ जहाँ अग्नि का अभाव है वहाँ वहाँ धुँआ का अभाव है' - व्यतिरेक व्याप्ति है।

सूत्रात्मक रूप में 'हेतु साध्य का व्यापक है' अथवा जहाँ-जहाँ हेतु है वहाँ वहाँ साध्य है' - अन्वय व्याप्ति को अभिव्यक्त करता है, यथा - 'जहाँ-जहाँ धुँआ है वहाँ वहाँ आग है'। इसी भाँति 'जहाँ-जहाँ साध्य का अभाव है वहाँ वहाँ हेतु का अभाव है' - व्यतिरेक व्याप्ति को अभिव्यक्त करता है, यथा - 'जहाँ-जहाँ आग का अभाव है वहाँ वहाँ धुँआ का अभाव है'।

→ सम-विषम व्याप्ति → एक अन्य दृष्टि से भी व्याप्ति दो प्रकार की होती है — सम व्याप्ति और विषम व्याप्ति।

जिस हेतु और साध्य की सत्ता का क्षेत्र सर्वथा समान होता है उनकी पारस्परिक व्याप्ति सम व्याप्ति है। ~~इस प्रकार~~ दूसरे शब्दों में 'जब व्यापक और व्याप्य का क्षेत्र समान हो तो उसे सम व्याप्ति कहते हैं। इस प्रकार सम व्याप्ति में हेतु और साध्य की सत्ता का क्षेत्र समान होने पर हेतु और साध्य को एक-दूसरे में परिवर्तन किया जा सकता है अर्थात् दोनों में से एक के आधार पर दूसरे का अनुमान अनुमान किया जा सकता है।

जिस हेतु का क्षेत्र साध्य के क्षेत्र से छोटा हो उसे विषम व्याप्ति कहते हैं, यथा - 'जहाँ-जहाँ धुँआ है वहाँ वहाँ आग है'। इसमें हेतु अथवा व्याप्य का क्षेत्र साध्य अथवा व्यापक के क्षेत्र से छोटा है अर्थात् व्याप्य के क्षेत्र से व्यापक का क्षेत्र बड़ा है। ऐसी स्थिति में हेतु और साध्य को एक-दूसरे में परिवर्तित कर उसके बीच व्याप्ति सिद्ध नहीं किया जा सकता अर्थात् साध्य के आधार पर हेतु अथवा लिंग का अनुमान नहीं किया जा सकता।

Scanned with CamScanner